गोरक्ष स्तवांजलि

संकलनकर्त्ता-भंभूलनाथ योगी

Website : www.yogigorakshnaht.org E-mail : media@yogigorakshnath.org

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का दर्शन

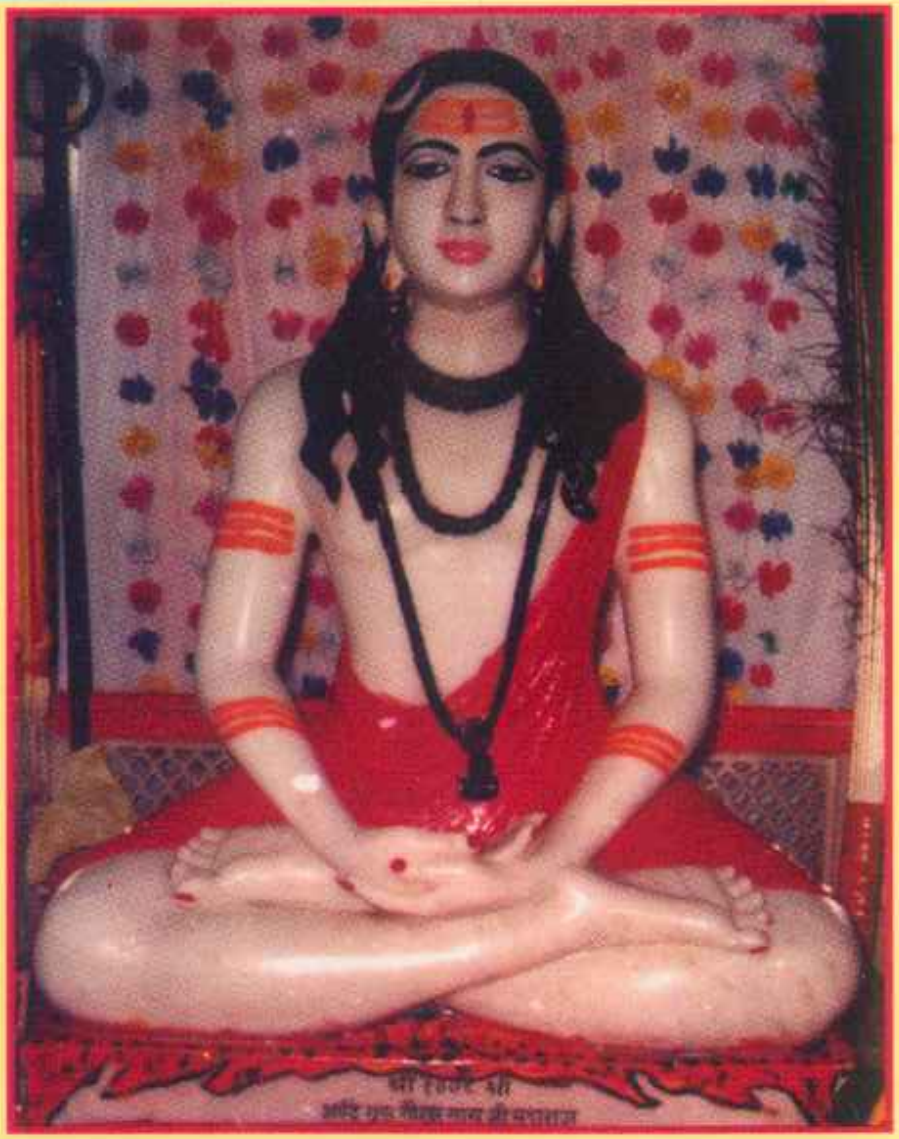

मन्दिर में मुख्य मूर्ति

Website : www.yogigorakshnaht.org E-mail : media@yogigorakshnath.org

❋ ॐ शिव गोरक्ष योगी ❋

गोरक्ष स्तवाञ्जलि

संकलन कर्त्ता–

भंभूलनाथ योगी

प्रकाशक–

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर अखाड़ा, अपर रोड, हरिद्वार–249401

फोन : 01334–226583

Website : http://yogigorakshnath.org

E-mail : guruyogivilasnathji@gmail.com, yogivilasnath12@gmail.com

चतुर्थ संस्करण 2000] **(मूल्य 20.00 रु०)** [सन् 2013

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रातः स्मरणम्	4
2.	गोरक्ष स्तवाञ्जलि	6
3.	अथ ज्ञान गोदड़ी प्रारम्भः	11
4.	श्री नाथ जी का बालाष्टक नं. 1	16
5.	श्री गोरक्षनाथाष्टक नं. 2	20
6.	श्री गोरक्षनाथाष्टक नं. 3	24
7.	गोरक्ष संकट मोचन	27
8.	शिव गोरक्ष बावनी	32
9.	निर्वाण समाध	42

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
10.	सप्तश्लोकी गोरक्ष गीता	46
11.	श्री नाथ जी की मंगला आरती	48
12.	श्री गुरू गोरक्षनाथ जी की संध्या आरती	52
13.	गुरू गोरक्षनाथ जी की आरती	55
14.	प्रार्थना	57
15.	गोरक्षनाथ जी की स्तुति	60
16.	गोरक्षनाथ अवतार कथा	63
17.	छः जतियों का शब्द	78
18.	भजन	82
19.	सूची	84

❋ सरस्वत्यै नमः ❋

।। प्रातः स्मरणम् ।।

प्रातः स्मरामि परमेश्वरमादिनाथं
मत्स्येन्द्रनाथ जलधारी पदारविन्दम्।
गोरक्षनाथ गुरुदेव मुखारविन्दं
गीर्वाण वाचमनिश गणराज रामौ।।1।।

प्रातः स्मरामि शशिकान्त शिलातलस्थं
सिद्धासनं सकल सिद्ध समाज जुष्टम्।
उद्यद्दिनेश किरणारुण जाजजूटम्
गोरक्षमय मखण्ड मवेद्यमाद्यम्।।2।।

प्रातभजामि भुजगेश्वर यज्ञसूत्रं
तापत्रय त्रिविध पापहरं त्रिनेत्रम्।
सिद्धसुरोरग नरामर वन्द्य पादं
गोरक्ष मक्षर मनादि मनन्त मीढयम्।।3।।
प्रातर्नमामिनिगमागम गम्यमेकं
भूभूपभूसुरहिताय कृतावतारम्।
शान्तं शशाङ्क दल कोमल कान्तकायं
मायापतिं पतितपावन मप्रमेयम्।।4।।

इति प्रातः स्मरणम् सम्पूर्ण

****

❋ ॐ शिव गोरक्ष योगी ❋

गोरक्ष स्तवाञ्जलि

❋ अथ श्री गोरक्ष चालीसा प्रारम्भ ❋

दोहा- गणपति गिरिजा पुत्र को सिमरूं बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करूं शारद नाम अधार।।

चौपाई- जय 3 गोरक्ष अविनाशी, कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी।
जय 3 गोरक्ष गुणज्ञानी, इच्छा रूप योगी वरदानी।।
अलख निरञ्जन तुम्हरो नामा, सदा करो भक्त हित कामा।
नाम तुम्हारा जो कोई गावे, जन्म जन्म के दुःख नशावे।
जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे, भूत पिशाच निकट नहीं आवे।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे, रूप तुम्हारा लख्या न जावे।

निराकार तुम हो निर्वाणी, महिमा तुम्हरी वेद न जानी।
घट घट के तुम अन्तर्यामी, सिद्ध चौरासी करें प्रणामी।
भस्म अङ्ग गले नाद विराजे, जटा शीश अति सुन्दर साजे।
तुम बिन देव और नहीं दूजा, देव मुनि जन करते पूजा।
चिदानन्द सन्तन हितकारी, मङ्गल करण अमङ्गल हारी।
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी, गोरक्षनाथ सकल प्रकासी।
गोरक्ष गोरक्ष जो कोई ध्यावे, ब्रह्म रूप के दर्शन पावे।
शङ्कर रूप धर डमरू बाजे, कानन कुण्डल सुन्दर साजे।
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा, असुर मार भक्तन रखवारा।
अति विशाल है रूप तुम्हारा, सुर न मुनिजन पावें न पारा।
दीन बन्धु दीनन हितकारी, हरो पाप हम शरण तुम्हारी।

योग युक्ति में हो प्रकाशा, सदा करो सन्तन तन वासा।
प्रातःकाल ले नाम तुम्हारा, सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा।
हठ हठ गोरक्ष हठीले, मार मार वैरी के कीले।
चल चल चल गोरक्ष विकराला, दुश्मन मार करो बेहाला।
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी, अपने जन की हरो चौरासी।
अचल अगम हैं गोरक्ष योगी, सिद्धि देवो हरो रस भोगी।
काटो मार्ग यम की तुम आई, तुम बिन मेरा कौन सहाई।
अजर अमर है तुम्हरी देहा, सनकादिक सब जोरहिं नेहा।
कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा।
योगी लखें तुम्हारी माया, पारब्रह्म से ध्यान लगाया।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे, अष्ट सिद्धि नव निधि घर पावे।

शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा, पापी दुष्ट अधम को तारा।
अगम अगोचर निर्भय नाथा, सदा रहो सन्तन के साथा।
शङ्कर रूप अवतार तुम्हारा, गोपीचन्द भर्तृहरि को तारा।
सुन लीजो प्रभु अरज हमारी, कृपा सिन्धु योगी ब्रह्मचारी।
पूर्ण आस दास की कीजे, सेवक जान ज्ञान को दीजे।
पतित पावन अधम अधारा, तिनके हेतु तुम लेत अवतारा।
अलख निरञ्जन नाम तुम्हारा, अगम पंथ जिन योग प्रचारा।
जय जय जय गोरक्ष भगवाना, सदा करो भक्तन कल्याणा।
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी, सेवा करें सिद्ध चौरासी।
जो पढ़हीं गोरक्ष चालीसा, होय सिद्ध साक्षी जगदीशा।
बारह पाठ पढ़े नित्य जोई, मनोकामना पूर्ण होई।

और श्रद्धा से रोट चढ़ावे, हाथ जोड़कर ध्यान लगावे।

दोहा- सुने सुनावे प्रेमवश, पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरक्षनाथ।
अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार।
कानन कुण्डल सिर जटा, अंग विभूति अपार।
सिद्ध पुरुष योगेश्वरों, दो मुझको उपदेश।
हर समय सेवा करूँ, सुबह शाम आदेश।।

।। इति गोरक्ष चालीसा समाप्तः।।

।। अथ ज्ञान गोदड़ी प्रारम्भः ।।

सत नमो आदेश! गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी।

चौ०-नाथ कहे दोउ कर जोरी, यह संशय मेटो प्रभु मोरी।
काया गोदड़ी का विस्तारा, तां से हो जीवन निस्तारा।
आदि पुरुष इच्छा उपजाई, इच्छा सखत निरञ्जन मांही।
इच्छा ब्रह्मा विष्णु महेशा, इच्छा शारद गौरी गणेशा।
इच्छा से उपजा संसारा, पांच तत्व गुण तीन पसारा।
अलष पुरुष जब किया विचारा, लक्ष चौरासी धागा डारा।
पांच तत्व की गोदड़ी दीनी, तीन गुणों से ठाड़ी कीनी।
ता में जीव ब्रह्म है माया, सद्गुरु ऐसा खेल बनाया।

सींवन पाँच पच्चीसों लागे, काम क्रोध मद मोह त्यागे।
अब काया गोदड़ी का विस्तारा, देखो सन्तो अगम अपारा।
चन्द्र सूर्य दोउ चन्दोआ लागे, गुरु प्रताप से सोवत जागे।
शब्द की सुई सुरति का डोरा, ज्ञान का टोपा निरंजन ओढ़ा।
इस गोदड़ी की कर हुशियारी, दाग न लागे देख विचारी।
सुमति के साबुन सत्गुरु धोई, कुमति के मैल को डारे खोई।
जिन गोदड़ी की किया विचारा, उनको भेंटे सिरजन हारा।
धीरज धूनी ध्यान धर आसन, जत की कोपीन सत्य सिंहासन।
युक्ति कमण्डल कर गहे लीना, प्रेम फावड़ी सत्गुरु चीना।

सेली शील विवेक की माला, दया की टोपी तन धर्मशाला।
मेहर मतंगा मति वैसाखी, मृगछाला मन ही की राखी।
निष्ठा धोती पवन जनेऊ, अजपा जपे सो जाने भेऊ।
रहे निरन्तर सद्गुरु दाया, साधो की संगत से कुच्छ पाया।
लय की लकुटी हृदय की झोली, क्षमा खड़ाऊँ पहिर बहोरी।
मुक्ति मेखला सुकृत सुमरनी, प्रेम प्याला पीले मौनी।
दास कूबरी कलह निवारी, ममता कुत्ती को ललकारी।
यतन जंजीर बान्ध जो राखे, अगम अगोचर खिड़की लाखे।
वीतराग वैराग्य निधाना, तत्व तिलक दीनो निर्वाना।
गुरु गम चकमक मन सम तूला, ब्रह्म अग्नि प्रगट भई मूला।
संशय शोक सकल भ्रम जारे, पांच पच्चीसो प्रगट मारे।

दिल के दर्पण दूविधा धोई, सो योगेश्वर पक्का होई।
सुन्न महल की फेरी देई, अमृत रस की भिक्षा लेई।
सुख दुःख मेला जग का भावे, त्रिवेणी के घाट न्हावे।
तन मन खोज भया जब ज्ञाना, तब लख पावे पद निर्वाना।
अष्ट कमल दल चक्र सूझे, योगी आप आप में बूझे।
इड़ा पिङ्गला के घर जाई, सुषुम्ना नीर रहा ठहराई।
ॐ सोहं तत्व विचारा, बंक नाल में किया संभारा।
मनसा मार्ग गगन चढ़ जाई, मान सरोवर बैठ न्हाई।
छूट गई कल्मश मिले अलेखा, इन नैनों से अलष को देखा।
अहंकार अभिमान बिदारा, घट में चौका किया उजारा।
श्रद्धा चँवर प्रीति की धूपा, निष्ठा नाम गुरु का रूपा।

अनहद नाद नाम की पूजा, ब्रह्म वैराग्य देव नहीं दूजा।
चित्त का चन्दन तुलसी फूला, हित का सम्पुट करले मूला।
गोदड़ी पहरी आप अलेषा, जिसने चलाया प्रगट भेषा।
जो गोदड़ी को पढ़े प्रभाता, जन्म जन्म का पातक जाता।
जो गोदड़ी को पढ़े मध्याना, सो नर पावे पद निर्वाना।
सन्ध्या सिमरण जो नर करे, जरा मरण भव सागर तरे।
जो गोदड़ी की निन्दा करे, षट दर्शन से वह नर टरे।
कहें मत्स्येन्द्र सुनो गोरक्षनाथ, ज्ञान गोदड़ी करे प्रकाश।

श्री नाथ जी! गुरु जी को!! आदेश आदेश!!!

***

श्री नाथ जी का बालाष्टक नं० 1

ॐ गुरु जी प्रथम सिमरण गुरुजी का करलो हृदय में ज्ञान प्रकाशकम्।

श्री नादि योग युगादि ब्रह्मा सेविते शिव माधवम् श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्, जय श्री नाथजी के चरण प्रणाम्यहम्। जै हो यति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्-श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।1।।

ॐ गुरुजी बाल जती गुरु ब्रह्मज्ञानी घट ही में ज्योति प्रकाशकम् उदित भानु बसन्त कमला श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत)।।2।।

ॐ गुरुजी रहत निश दिन अगम अगोचर सिद्ध ज्ञान प्रकाशकम्
श्री जपत सुरनर देव मुनिजन श्री बाल गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत) ।।3।।

ॐ गुरुजी आकाश धूना पाताल मण्डल पवन सङ्गम साहेरा
श्री अमर अयोनी जी का सिमरण करलो श्री बाल गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत) ।।4।।

ॐ गुरुजी आदि अन्त अनादि निर्भय रहत निश दिन उन्मुना श्री
लख चौरासी जीव योनियों से नाम कट दो श्री बाल गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्रीनाथ जी के चरण० (पूर्ववत) ।।5।।

ॐ गुरु जी जल तो अम्बर थल तो सागर सोहत कंठ में मेखला
श्री कानों में कुण्डल विभूति आभरण श्री बाल गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्रीनाथ जी के० (पूर्ववत) ।।6।।

ॐ गुरुजी एक ज्योति गुरु सकल व्यापी अनन्तानन्त पराक्रमम्।
श्री मदन मोहन जी का मान रख लो श्री बाल गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत) ।।7।।

ॐ गुरु जी आबू का मंडल द्वारका क्षेत्र गोरक्ष मढ़ी सुस्थान है
श्री माधो प्राँची में श्रीनाथ जी ने रुक्मिणी जी को कंगन बान्ध्यो
श्री बाल गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पर्ववत) ।।8।।

ॐ गुरु जी इतना श्री नाथ जी का बालाष्टक पढ़त निशदिन
कैलाश वासा सदा फलम्
श्री देवकृष्ण श्री नाथ जी की शरण आयो श्री बाल गोरक्ष के
चरण प्रणाम्यहम्। जय श्रीनाथ जी के
चरण प्रणाम्यहम्। जय हो यति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्।
श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।9।।

श्री गोरक्षनाथाष्टक नं० 2

गोरक्ष नाथ सुनाथ निर्भय निर्विकार निरञ्जनम्
अजर अमर अडोल निश्चल श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्
जय श्री नाथ जी के चरण प्रणाम्यहम् जय हो यति गोरक्ष के
चरण प्रणाम्यहम्, श्री गुरुदेव जी के चरण प्रणाम्यहम्।।1।।

ब्रह्मा शेष महेश नारद अष्ट भैरव सिद्ध यति
ध्यावते दोउ पाद पङ्कज ध्यावते सिद्ध गणपति श्री गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम, जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।2।।

अष्ट सिद्धि नवनिधि वन्दित ध्यावते रघुवर सिया
व्यास शुक प्रह्लाद सेवितं सेवते हनुमत प्रिया, श्री गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत) ।।3।।

शून्य मन्दिर करत आसन योग ध्यान सदा रटन (रत)
आत्म लाभ सन्तोष पूर्ण श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्
श्री नाथ जी के० (पूर्ववत) ।।4।।

मान नहीं अभिमान जाके कनक माटी एक समान
राग द्वेष अतीत मनसा श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्
श्री नाथ जी के० (पूर्ववत) ।।5।।

अङ्ग विभूति विराजत सुन्दर भाल तिलक त्रिलोचनम्
चन्द्र सूर्य अग्नि कहिये कर्ण कुण्डल अद्भुतम श्री गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत) ।।6।।

ज्ञान ध्यान अचिन्त्य मूर्ति आत्म ज्योति सदा शिवोम्
त्रिगुण रूप अतीत युर्य्या श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्
श्री नाथ जी के० (पूर्ववत)।।7।।

श्री कृष्ण चन्द्र सुध्यान कीन्हों कंस दुष्टादिक हतम्
षोडश नार सहस्त्र सुत पाइये अष्टचक्र ऊपर शोभितम् श्री गोरक्ष
के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत)।।8।।

अक्षयमाल विराजत सुन्दर चर्म चन्दन मृग धारं
त्राटक मुद्रा ज्ञान पूर्ण कथन्ते सनकादिकं श्री गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत)।।9।।

गोरक्ष अष्टक पढ़त निशदिन कैलाश वासा सदा शिवफलं सर्व तीर्थ लभते पुण्यं सर्व पापं विनाशनम् श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के चरण प्रणाम्यहम्। जय हो यती गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।10।।

श्री गोरक्षनाथाष्टक नं० 3

गोरक्षनाथ योगेन्द्र जगपति आगम निगम यश गावते!

शंकर शेष विरंचि शारद नारद वीणा बजावते!!

श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्, जय श्री नाथजी के चरण प्रणाम्यहम्

जय हो यति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्, श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।1।।

बाल रूप यतीन्द्र जटाधर ध्यावते षट्मुख यति श्री रामचन्द्र वशिष्ठ हनुमत ध्रुव प्रह्लाद रतिपति श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।2।।

सेली नाद सुकण्ठ साजत अनहद शब्द प्रकाशितम्
अजर अमर अडोल आसन सुर नर मुनि मन रञ्जनम् श्री गोरक्ष
के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।3।।

अङ्ग भस्म असङ्ग निर्मल उन्मुन ध्यान सदा रतम्
चन्द्र भानु समान लोचन कर्ण कुण्डल शोभितम् श्री गोरक्ष के
चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।4।।

अष्ट सिद्धि नव नाथ भैरव वीर चौसठ योगिनी
इन्द्र वरुण कुबेर सेवित मदन मोहन रुक्मिणी श्री गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।5।।

उत्तर देश विचित्र गिरिवर सुर सरित अगणित बहे साधक सिद्ध सुजान तज मद मान निर्गुण ब्रह्म लहे श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।6।।

परशु धर तप कठिन कीन्हों सागर तट मठ बान्धियो धुन्धुकार निवारण हित मंजुनाथ जी प्रगट भयो श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।7।।

श्रीपति नाथ सुनाथ अष्टक पढ़त विघ्न नशावहीं वर्णत सिद्ध चौरंगी योगिवर मन वांछित फल पावहीं श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।8।।

ॐगोरक्ष गोपालं-घड़ी घड़ी पल पल के रक्षपालं-वृद्धं न बाल जीते यमकालं प्रातःकाल मङ्गल शृंङ्गार आरती धूप ध्यान की।

सिद्धो गुरुवरो! आदेश!! आदेश!!!

****

गोरक्ष संकट मोचन

बाल योगी भये रूप लिये तब, आदि नाथ लियो अवतारो।

ताहि समय सुख भयो सिद्धों को, तब शिव गोरक्ष नाम उचारो।।

भेष भगवान ने करी विनती, तब अनुपान शिला पे ज्ञान विचारो।

को नहीं जानत है जग में, शिव गोरक्ष है नाम तुमारो।।1।।

सत्य युग में भये कामधेनु गऊ तब, जति गोरक्षनाथ को भयो प्रचारो।
आदिनाथ वरदान दियो तब, गौतम ऋषि से शब्द उचारो।।
त्र्यम्बक-क्षेत्र में स्नान कियो तब, गोरक्ष गुफा का नाम उचारो।
को नहिं जानत है जग में, जती गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।2।।
सत्यवादी भये हरिश्चन्द्र शिष्य तब, शून्य शिखर से भयो जयकारो।
गोदावरी का क्षेत्र में प्रभु ने, हरहर गङ्गा शब्द उचारो।।
यति शिव गोरक्ष जाप जपे, शिव योगी भये परम सुखारो।
को नहिं जानत है जग में, यति शिव गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।3।।
आदि शक्ति से सम्वाद भयो जब, माया मत्स्येन्द्रनाथ भयो अवतारो।
ताहि समय प्रभु नाथ मत्स्येन्द्र, सिंहलद्वीप को जाय सुधारो।

राज्य योग में ब्रह्म लगायो तब, नाद बिन्द को भयो प्रचारो।
को नहिं जानत है जग में, यति गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।4।।
आन ज्वाला जी कीने तपस्या, तब ज्वाला देवी ने शब्द उचारो।
ले जति गोरक्षनाथ को नाम तब, गोरक्ष डिब्बी को नाम पुकारो।।
शिष्य भया जब मोरध्वज राजा, तब गोरक्षपुर में जाय सिधारो।
को नहीं जानत है जग में, यति गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।5।।
ज्ञान दियो जब नव नाथों को, तब त्रेता युग को भया प्रचारो।
योग लियो रामचन्द्र जी ने जब, यति शिव गोरक्ष नाम उचारो।।
नाथ जी ने वरदान दियो तब, बद्रीनाथ जी नाम पुकारो।
को नहीं जानत है जग में, यति शिव गोरक्ष है नाम तुमारो।।6।।

गोरक्ष मढ़ी पे तपस्या कीनी तब, द्वापर युग को भयो प्रचारो।
कृष्ण जी को उपदेश दियो तब, ऋषि मुनि भये परम सुखारो।।
पाल भूपाल के पालनते शिव, माल हिमालय भयो उजियारो।
को नहिं जानत है जग में, यति गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।7।।
ऋषि मुनियों से सम्वाद भयो जब, युग कलियुग को भयो प्रचारो।
कार्य में सहाय किया जब जब, राजा भर्तृहरि को दुःख निवारो।।
ले योग शिष्य भयो जब राजा, रानी पिङ्गला को संकट टारो।
को नहीं जानत है जग में, यति गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।8।।
मैनावती रानी ने स्तुति किया जब, कुंवाँ पर जाके शब्द उचारो।
राजा गोपीचन्द शिष्य भयो तब, नाथ जलन्धर के सङ्कट टारो।।

नवनाथ चौरासी सिद्धों में, भगत पूरन भयो परम सुखारो।
को नहीं जानत है जग में, यति गोरक्षनाथ है नाम तुमारो।।9।।

दोहा-नव नाथों में नाथ हैं, आदिनाथ अवतार।
यति गुरु गोरक्षनाथ जी, पूरण ब्रह्म करतार।।
संकट मोचन नाथ का, सुमरे चित विचार।
यति गुरु गोरक्षनाथ जी, मेरा करो निस्तार।।
मौजनाथ की विनती सुनो, शिव गुरु गोरक्षनाथ।
नवनाथ चौरासी सिद्ध में, आदिम आदिनाथ।।
श्री गुरु गङ्गनाथ को, आदेश करूं बारम्बार।
गोरक्ष सङ्कट मोचन, पढ़ो होय निस्तार।।

****

शिव गोरक्ष बावनी

शिव गोरक्ष शुभनाम को रटते शेष महेश।
सरस्वती पूजन करे वन्दन करे गणेश।।1।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटे जो मन दिन रात।
आवागमन को मेट के मन वांछित फल पात।।2।।
शिव गोरक्ष शुभनाम से हुए हैं सिद्ध सुजान।
नाम प्रताप से मिट गया लोभ क्रोध अभिमान।।3।।
शिव गोरक्ष शुभनाम से हो जावो भव सागर पार।
कलि काल में है बड़ा सुन्दर खेवन हार।।4।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है जिसने लिया चितलाय।
अष्टसिद्धि नवनिधि मिली अन्त में अमर कहाय।।5।।

शिव गोरक्ष शुभनाम में शक्ति अपरम्पार।
लेते ही मिट जात है अन्तर के अन्धकार।।6।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है रटे जो निश दिन जीव।
नश्वर यह तन छोड़ के जीव बनेगा शिव।।7।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को मन तूं रटले अघाय।
काहे को चञ्चल भया जैसे पशु हराय।।8।।
शिव गोरक्ष शुभनाम में निशदिन कर तूं वास।
अशुभ कर्म सब छूटि हैं सत्य का होगा भास।।9।
शिव गोरक्ष शुभनाम में शक्ति भारी अगाध।
लेने से ही तर गये नीच कोटि के व्याध।।10।।

शिव गोरक्ष शुभनाम को जो धरे अन्तर बीच।
सबसे ऊँचा होत है भले होय वह नीच।।11।।
शिव गोरक्ष शुभनाम में करे जो नर अति प्रेम।
उसको नहीं करना पड़े पूजा व्रत जप नेम।।12।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटे जो बारम्बार।
सहजहि में हो जायेंगे भव सिन्धु से पार।।13।।
शिव गोरक्ष शुभनाम से सीख लेव अद्वैत।
मेरा तेरा छोड़ दो तजो सकल ये द्वैत।।14।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटना आठों याम।
आखिर में यह आयगी मूड़ी तुमको काम।।15।।

शिव गोरक्ष शुभनाम में शक्ति भरी अथाह।
रटने वालों को मिला भव सिन्धु का थाह।।16।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को पहचाना जयदेव।
यह दुस्सह संसार से तर गये वो तत खेव।।17।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रसना रट तूं हमेश।
वृथा नहीं बकवाद कर पल 2 कहे आदेश।।18।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटले तूं चितलाय।
घोर कली से बचने का एक ही यह उपाय।19।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को मन तूं रट दिन रात।
झूठ प्रपञ्च को त्याग दे छोड़ जगत की बात।।20।।

शिव गोरक्ष शुभनाम को रसना कर तूं याद।
काहे स्वाद भूल के वृथा करत बकवाद।।21।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को मन तूं रट दिन रैन।
कबहू न खाली जान दे एक भी तेरा वैन।।22।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को सुमिरे कोटि सन्त।
श्री नाथ कृपा से हो गया जन्म मरण का अन्त।।23।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है निर्मल पावन गंग।
रटने से रहती सदा ऋद्धि सिद्धि सब संग।।24।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसा पूनम चन्द।
रटते हैं निशदिन उन्हें राम कृष्ण गोविन्द।।25।।

शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसा गङ्गा नीर।
रटके उतरे कोटिजन भवसागर के तीर।।26।।
शिव गोरक्ष शुभनाम में जो जन करते आस।
निश्चय वो तो जात हैं अलष पुरुष के पास ।।27।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसा सुन्दर आम।
रटने से ही हो गया अमर जगत में नाम।।28।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसे दीप प्रकाश।
नित रटने से होत है अलष पुरुष का भास।।29।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है उदधि तरन को जहाज।
रटने से हो गये हैं अमर भरथरी राज।।30।।

शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसी सूर्य किरन।
रटले जीव तूँ प्रेम से चाहे जो सिन्धु तरन।।31।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है निर्मल और विशुद्ध।
रटने से शुद्ध होत है होय जो जीव अशुद्ध।।32।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है अमर सुधा रस विन्द।
पीने से हो गये हैं अजर अमर गोपीचन्द।।33।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटे अनेको राज।
जरा मरण का भय मिटा सुधरे सबके काज।।34।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटा है पूरन मल।
आधि व्याधि सब मिट गई जरा मरण गया टल।।35।।

शिव गोरक्ष शुभनाम को रटते चतुर सुजान।
अन्तर तिमिर विनाश हो उपजत है शुद्ध ज्ञान।।36।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है सुन्दर उज्वल भान।
रटने वालों को कभी होवे नहीं कुछ हान।।37।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को पारस पत्थर जान।
जीव रूपी इस लोह को करते स्वर्ण समान।।38।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को जानो सुर तरु वर।
रटने से मिल जात है जीव को इच्छित वर।।39।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटते कोटिक सन्त।
नाम प्रताप से कट गया चौरासी का फन्द।।40।।

शिव गोरक्ष शुभनाम का बहुत भारी पर्व।
जिसको हैं रटते सदा सुर नर मुनि गन्धर्व।।41।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटते श्री हनुमान।
भक्तों में हुए अग्रगण्य देवों में मिला मान।। 42।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को रटे जो जीव अज्ञान।
नाथ प्रताप से होत है निश्चय चतुर सुजान।।43।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसा निर्मल जल।
प्रेम लगा रटते रहो क्षण 2 और पल 2।।44।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है कलि में तारण हार।
रटने वालों के लिये खुला है मोक्ष का द्वार।।45।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है जैसा स्वच्छ आकाश।
रटने वालों को बना लेते हैं निज दास।।46।।

शिव गोरक्ष शुभनाम है अग्नि आपो आप।
रटने वालों के सभी जल जाते है पाप।।47।।
शिव गोरक्ष शुभनाम है अमर सुधारस बिन्दु।
पीने से तर जात हैं सहज ही में भव सिन्धु।।48।।
शिव गोरक्ष शुभनाम की महिमा अपरम्पार।
कृपा सिन्धु की बिन्दु ही करदे भव से पार।।49।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को बन्दन करूँ हजार।
कृपा करो त्रिलोक पर कर दो भव से पार।।50।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को प्रेम सहित आदेश।
ऐसी कृपा करो प्रभु रहे नहीं कुछ शेष।।51।।
शिव गोरक्ष शुभनाम को कोटि करूँ आदेश।
करके कृपा मिटाइये जन्म मरण का क्लेश।।52।।

निर्वाण समाध

ॐ गुरु जी सतगुरु खोजो मन कर चंगा, इस विधि रहना उत्तम संगा।
सहजे संगम आवे हाथ, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।1।।

ॐ गुरु जी कंचन काया ज्ञान रतन, सतगुरु खोजो लाख यतन।
हस्ती मनुआ राखो डाट, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।2।।

ॐ गुरु जी बोलन चालन बहु जंजाला, गुरु वचनी-2 योग रसाला।
नियम धर्म दो राखो पास, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।3।।

ॐ गुरु जी निरे निरन्तर सिद्धों का वासा, इच्छा भोजन परम निवासा।
काम क्रोध अहंकार निवार, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।4।।

ॐ गुरु जी पहिले छोड़ो वाद विवाद, पीछे छोड़ो जिभ्या का स्वाद।
त्यागो हर्ष और विषाद, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।5।।

ॐ गुरु जी आलस निद्रा छींक जंभाई, तृष्णा डायन बन जग को खाई।
आकुल व्याकुल बहु जंजाल, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।6।।

ॐ गुरु जी आलस तोड़ो निद्रा छोड़ो, गुरु चरण में इच्छा जोड़ो।
जीह्वा इन्द्री राखो डाट, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।7।।

ॐ गुरु जी योग दमोदर भगवा करो, ज्योतिनाथ का दर्शन करो।
जत सत दो रखो पास, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।8।।

ॐ गुरु जी अगम अगोचर कण्ठीबन्ध द्वादश, वायु खेले चौसठ फन्द।
अगम पुजारी खाण्डे की धार, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।9।।

ॐ गुरु जी डरे डूंगरे चढ़ नहीं मरना, राज द्वारे पग नहीं धरना।
छोड़ो राजा रङ्क की आस, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।10।।

ॐ गुरु जी जड़ी बूटी की बहु विस्तारा, परम जोत का अन्त न पारा।
जड़ी बूटी से कारज सरे, वैद्य धन्वन्तरी काहे को मरे।।
जड़ी बूटी सोचो मत कोई, पहले राण्ड वैद्य की होई।
जड़ी बूटी वैद्यों की आस, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।11।।

ॐ गुरु जी वेद शास्त्र को बहु विस्तारा, परम जोत का अन्त न पारा।
पढ़े लिखे से अमर होय, ब्रह्मा परले काहे को होय।
वेद शास्त्र ब्राह्मणों की आस, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।12।।

ॐ गुरु जी कनक कामनी दोनों त्यागो, अन भिक्षा पाँच घर माँगो।
छोड़ो माया मोह की आस, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।13।।

ॐ गुरु जी सोने चाँदी का बहु विस्तारा, परम जोत का अन्त न पारा।
सोना चाँदी से कारज सरे, भूपति, चक्रवर्ती, राजे राज काहे को तजे।
सोना चाँदी जगत की आस, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।14।।

ॐ गुरु जी ज्योति रूप एक ओंकारा, सत्गुरु खोजो होवे निस्तारा।
गुरु वचनों के रहना पास, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।15।।

ॐ गुरु जी गगनमण्डल में गुरुजी का वासा, जहाँ पर हंसा करे निवासा।
पाँच तत्त्व ले रमना साथ, श्री गुरु उवाच निर्वाण समाध।।16।।

ॐ गुरु जी उड़ान योगी मड़ान काया, मरे न योगी धरे न औतार।
सत्य 2 भाषन्ते श्री शम्भू जती गुरु गोरक्ष नाथ जी निर्वाण?
नाथ जी गुरु जी आदेश आदेश आदेश।

सप्तश्लोकी गोरक्ष गीता

वेदा न लोका न सुरा न यज्ञा वर्णाश्रमो नैव कुलं न जाति।
न धूम्र मार्गों न च दीप्त मार्गों ब्रह्मैक रूपं परमार्थ तत्वम्।।1।।

मूर्खोऽपि नाहं न च पण्डितोऽहं मौनं च वार्ता न च मे कदाचित्।
वितर्क तर्क च कथं वदामि स्वरूप निर्वाण मना मयोहम्।।2।।

न ते माता च पिता न बन्धुर्नते च पत्नी न च शत्रु मित्राः।
न पक्षपातो न विपक्षपातः कथं हि तृप्तो न च काम कामी।।3।।

जितेन्द्रियोहं न जितेन्द्रियोहं न च संयमो मे नियमो न जातिः।
त्वया मयायत्र कथं वदामि वयं स्वरूप निर्वाण मना मयोहम्।।4।।

शिवं न जानामि कथं वदामि वयं शिवश्च परमार्थं तत्वम्।
सत्य स्वभावो गगनोप मोहं ज्ञानामृतं शुद्ध मतीन्द्रियोहम्।।5।।

अतत्व रूपं नहि वस्तु किंचित् तत्व स्वरूपं नहि वस्तु किंचित्।
आत्म स्वरूपं परमार्थ तत्वं न हिंसको वापि न चापि शुद्धम्।।6।।

षडङ्ग योगो न च नैव शुद्धं गुरुपदेशे न च नैव शुद्धम्।
मनोविनाशाय च नैव शुद्धं वयं च तत्वं वयं मेव शुद्धम्।।7।।

श्री नाथ जी की मंगला आरती

जय गोरक्ष योगी (श्री गुरु जी) हर हर हर गोरक्ष योगी।
वेद पुराण बखानत, ब्रह्मादिक सुरमानत, अटल भवन भोगी।
ॐ जय गोरक्ष योगी।।1।।

बाल यती ब्रह्मज्ञानी योग युक्ति पूरे (श्री गुरुजी) योग युक्ति पूरे।
सोहं शब्द निरन्तर (अनहद नाद निरन्तर) बाज रहे तूरे।
ॐ जय गोरक्ष योगी।।2।।

रत्न जड़ित मणिमाणिक कुण्डल कानन में (श्री गुरुजी) कुंडल कानन में
जटा मुकुट सिर सोहत भस्मन्ती तन में। ॐ जय गोरक्ष
योगी।।3।।

आदि पुरुष अविनाशी निर्गुण गुण राशी (श्री गुरुजी) निर्गुण गुण राशी

सुमिरण से अघ छूटे सुमिरण से पाप छूटे टूटे यम फाँसी

ॐ जय गोरक्ष योगी।।4।।

ध्यान कियो दशरथ सुत रघुकुल वंशमणि (श्रीगुरुजी) रघुकुल वंशमणि

सीता शोक निवारक सीता मुक्त कराई मार्‌यो लङ्का धनी।

ॐ जय गोरक्ष योगी।।5।।

नन्दनन्दन जगवन्दन गिरधर वनमाली (श्री गुरुजी) गिरधर बनमाली।

निश वासर गुणगावत, वंशी मधुर बजावत, संग रुक्मिणि बाली।

ॐ जय गोरक्ष योगी।।6।।

धारा नगर मैनावन्ती तुम्हरो ध्यान धरे (श्री गुरुजी) तुम्हरो ध्यान धरे अमर किये गोपीचन्द अमर किये पूर्णमल संकट दूर करे। ॐ जय गोरक्ष योगी।।7।।

चन्द्रावल लखरावल निजकर घात मरी (श्री गुरुजी) निजकर घात मरी योग अमर फल देकर 2 क्षण में अमर करी। ॐ जय गोरक्ष योगी।।8।।

भूप अमित शरणागत जनकादिक ज्ञानी (श्री गुरुजी) जनकादिक ज्ञानी मान दिलीप युष्ठिर हरिश्चन्द्र से दानी। ॐ जय गोरक्ष योगी।।9।।

वीर धीर संग ऋद्धि सिद्धि गणपति चँवर करे (श्री गुरुजी) गणपति चँवर करे, जगदम्बा जगजननी 2 योगिनी ध्यान धरे। ॐ जय गोरक्ष योगी।।10।।

दया करो चौरंग पर कठिन विपत्ति टारी (श्री गुरुजी) कठिन विपत्ति टारी दीनदयाल दयानिधि 2 सेवक सुखकारी। ॐ जय गोरक्ष योगी।।11।।

इतनी श्री नाथ जी की मंगला आरती निशदिन जो गावे (श्री गुरुजी) सर्वदिन रट गावे, भणत विचार परम पद (भर्तृहरि भूप अमर पद) सो निश्चय पावे। ॐ जय गोरक्ष योगी ।।12।।

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की संध्या आरती

ॐ गुरुजी शिव जय जय गोरक्ष देवा श्री अवधू हर हर गोरक्ष देवा। सुर नर मुनि जन ध्यावत सुर नर मुनि जन सेवत। सिद्ध करें सब सेवा श्री अवधू संत करें सब सेवा। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।1।। ॐ गुरुजी योग युगति कर जानत मानत ब्रह्म ज्ञानी श्री अवधू मानत सर्व ज्ञानी। सिद्ध शिरोमणि राजत संत शिरोमणि साजत गोरक्ष गुण ज्ञानी। श्री अवधू गोरक्ष सर्व ज्ञानी। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।2।। ॐ गुरुजी ज्ञान ध्यान के धारी गुरु सब के हो हितकारी। श्री अवधू सब के हो सुख कारी। गौ इन्द्रियों के रक्षक सर्व इन्द्रियों के पालक। राखत सुध सारी श्री अवधू राखत सुध सारी। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।3।।

ॐ गुरु जी रमते श्री राम सकल जुग माही छाया है नाहीं। श्री अवधू माया है नाहीं। घट घट के गोरक्ष व्यापै सर्व घट श्री नाथ जी विराजत। सो लक्ष्यमन मांही श्री अवधू सो लक्ष्य हिय मांही।

शिव जय जय गोरक्ष देवा० ।।4।।

ॐ गुरु जी भस्मी गुरु लसत सरजनी है अंगे। श्री अवधू जननी है संगे। वेद उच्चारे सो जानत योग विचारे सो मानत। योगी गुरु बहुरंगा श्री अवधू बाले गोरक्ष सर्व संगा। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।5।।

ॐ गुरुजी कंठ विराजत सेली और शृंगी जत मत सुख बेली- श्री अवधू जत सत सुख बेली भगवा कंथा सोहत-गेरुवा अचला सोहत ज्ञान रतन थैली श्री अवधू योग युगति झोली। शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।6।।

ॐ गुरुजी कानों में कुण्डल राजत साजत रवि चन्द्रमा-श्री अवधू सोहत मस्तक चन्द्रमा। बाजत शृंगी नादा-गुरु बाजत अनहद नादा-गुरु भाजत दुःख द्वन्दा-श्री अवधू नाशत सर्व संशया शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।7।।

ॐ गुरुजी निद्रा मारो गुरु काल संहारो-संकट के हो बैरी-श्री अवधू दुष्टन के हो बैरी-करो कृपा सन्तन पर गुरु दया पालो भक्तन पर शरणागत तुम्हरी श्री अवधू शरणागत तुम्हरी शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।8।।

ॐ गुरुजी इतनी श्रीनाथ जी की सन्ध्या आरती निशादिन जो गावे-श्री अवधू सर्व दिन रट गावे। वर्णी राजा रामचन्द्र स्वामी गुरु जपे राजा रामचन्द्र योगी-मनवांछित फल पावे-श्री अवधू सुख सम्पत्ति फल पावे-शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।9।।

गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती

जय गोरक्ष देवा शिव जय गोरक्ष देवा।
करे कृपा मम ऊपर नित्य करूं सेवा।।1।।
शीश जटा अति सुन्दर भाल चन्द्र सोहे।
कानन कुण्डल झलकत निरखत मन मोहे।।2।।
गलविच सेली नाथ सुशोभित तन भस्मी धारी
आदि पुरुष योगीश्वर सन्तन हितकारी।।3।।
नाथ निरंजन आप ही घट-घट के वासी।
करत कृपा निज जन पर मेटत यम फाँसी।।4।।
ऋद्धि सिद्धि चरणों में लोटत माया है दासी।
आप अलख अवधूता उत्तराखण्ड वासी।।5।।

अगम अगोचर अकथ अरुपी सबसे हो न्यारे।
योगीजन के आप ही सदा हो रखवारे।।6।।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हारा निशदिन गुण गावे।
नारद शारद सुर मिल चरनन चित्त लावे।।7।।
चारों युग में आप विराजत योगी तन धारी।
सतयुग द्वापर त्रेता कलयुग भय टारो।।8।।
गुरु गोरक्ष नाथ की आरती निशदिन जो गावे।
विनवत बाल त्रिलोकी मुक्ति फल पावे।।9।।

****

।। प्रार्थना ।।

ॐ शिव गोरक्ष योगी

गंगे हर-नर्मदे हर, जटाशङ्करी हर ॐ नमो पार्वती पतये हर, बोलिये श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ महाराज की जय, माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ महाराज की जय, नवनाथ चौरासी सिद्धों की जय, भेष भगवान की जय, अटल क्षेत्र की जय, रमतेश्वर महाराज की जय, कदली काल भैरवनाथ महाराज जी की जय, पात्र देवता भगवान की जय, ज्वाला महामाई की जय, सनातन धर्म की जय, अपने-अपने गुरु महाराज की जय, गौ-ब्राह्मण की जय, बोल साचे दरबार की जय, हर हर महादेव की जय ।

कर्पूर गौरम् करुणावतारम्, संसारसारम् भुजगेन्द्र हारम्
सदा वसन्तम् हृदयार विन्दे,भवंभवानी सेहितम् नमामी
मन्दारमाला कलिनाल कायै कपालमालाङ्कित कन्थराय

नमः शिवायै च नमः शिवाय

गोरक्ष बालम् गुरु शिष्य पालम् शेषां हिमालम् शशिखण्ड भालम्
कालस्य कालम जिनजन्म जालम्, वन्दे जटालम जगदब्जनालम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवो महेश्वरा,
गुरुः साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्री गरवै नमः

ध्यानमूलं गुरोमूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम
मन्त्रमूलं गुरुरवाक्य मोक्ष मूलं गुरु कृपा

मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्यदेवं निरन्जनम्
गुरुरवाक्य सदा सत्यं सत्यंम अेकम परंपदम्
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविडम त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम् देव देवाः
आकाशाय ताडका लिंगम पाताले वटुकेश्वरम्
मृत्यु लोके महाकालम सर्व लिंगम नमोस्तुते
शेली शृंगी शिर जटा झोली भगवा भेष
कानन कुण्डल भस्म लसै, शिव गोरक्ष आदेश।
ॐकार तेरा आधार, तीन लोक में जय-जय कार
नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी, गोरख साजे,

गले नाद, पुष्पन की माला, रक्षा करें, श्री शम्भु जति
गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।
चार खाणी चार बानी, चन्द्र सूर्य पवन पानी
एको देवा सर्वत्र सेवा, ज्योति पाटले परसो देवा
कानन कुण्डल गले नाद, करो सिद्धो नाद्कार
सिद्ध गुरोवरों को आदेश! आदेश!! आदेश!!!

***

गोरक्षनाथ जी की स्तुति

जय गोरक्ष स्वामी अन्तरयामी, दीनन के हितकारी,
मद मोह विनाशी शिव अविनाशी, काम क्रोध द्वै जारी।

यतियों के नायक सिद्ध सहायक, योग युक्ति अधिकारी,
दीजै आशीशा गोरक्ष ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।1।।
तन भस्मी भूषित कुण्डल शोभित, शीश जटा शुभकारी,
शुभ चन्द्र सुहावै छबि मन भावै, काल दण्ड कर धारी।
गुरु गोरक्ष ज्ञानी औढ़र दानी, बाल रूप ब्रह्मचारी,
दीजै आशीशा गोरक्ष ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।2।।
शुभ सतयुग त्रेता कृपा निकेता, करते योग प्रचारी,
द्वापर युग आये कृष्ण मन भाये, योग युक्ति सहकारी।
सन्त सहाई अति सुख दाई, कलियुग के भय हारी,
दीजै आशीशा गोरक्ष ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।3।।

माया है दासीगिरि गुह वासी, कठिन तपस्या प्यारी,
जो शरण तुम्हारे भये सुखारे, हुए अमर पद धारी।
कोटि भक्त उद्धारे विपत विदारे, कहते ग्रन्थ पुकारी,
दीजै आशीशा गोरक्ष ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।4।।

करिये गुरु दाया हरिये माया, नाथ त्रिलोक आधारी,
काटो यम फाँसी मिटे चौरासी, क्रोध लोभ देउ टारी।
यह स्तुति गावै सब सुख पावै, शीघ्र मिलत फल चारी,
दीजै आशीशा गोरक्ष ईशा, हम हैं शरण तुम्हारी।।5।।

गोरक्षं परमाचार्य्य योगमार्ग प्रवर्तकम्।
योग गम्यं समाधिस्थं वन्दे गोरक्ष नायकम्।।

श्रीनाथाय नमः

ॐ शिव गोरक्ष योगी

।। गोरक्षनाथ-अवतार कथा।।

नारदपुराण तथा स्कन्दपुराण से प्रमाणित है, किसी ब्राह्मण ने ज्योर्तिवित् के आदेश से गण्डान्त नक्षत्र में उत्पन्न निज पुत्र को अनिष्ट जानकर उसका समुद्र में परित्याग किया। वह बालक अतुल महिमशाली परमेश्वर की गतिविधि से किसी महामत्स्य का भोजन बना।

वह द्विजपुत्र दयामय को अघटित घटना अचिन्त्य रचनाचातुरी चमत्कार से काल के पाश में नवेष्टित हो जीवित ही रहा। एक बार

श्री पार्वती की अमरकथा विषयक प्रगाढ़ प्रार्थना के वशीभूत हो भूतनाथ भगवान महेश्वर कैलाश सैल को त्याग कर पार्वती को अमरकथा सुनाने के लिए महा पर्वत लोकालोक पर पहुंचे। वह महाशैल मणियों में भूषित था। अतएव उसकी शोभा अनूठी थी।

जिस प्रकार महावायु मेघमण्डल को दिगन्तरों में अपने वेग से प्रस्थानित करता है, वैसे ही अमर कथा सुनाने को एकान्त स्थान चाहने वाले श्री मूलनाथ ने तीन ताल द्वारा सकल पशु पक्षि वर्ग को उस स्थान से हटाया।

सर्वपूज्य भगवान् मणिरत्नों से शोभायमान लोकालोक से इस प्रकार प्राणियों को प्रशान्त कर श्री महादेवी को अमर कथा सुनाने

को अवहित हो गये। परमकारुणिक भक्तवत्सल श्री आदिनाथ आशुतोष ने भवानी को सपर्या से सन्तुष्ट हो मृत्यु को जीतने में समर्थ उस अमर कथा का उपदेश किया। श्री गौरी ने भी भगवान् को प्रणाम किया। बहुत काल कथा सुनते बीता, श्री पार्वती योगनिद्रा में अवस्थित हो गई।

इसी अवसर पर तेजोभार से प्रपीड़ित वही महामत्स्य जिसने अग्रजन्मा सुत को ग्रसित किया, उसी सागर तट पर आ पहुंचा एवं कथा हुंकृति को प्रगट किया, आदिदेव कथा सुनाते ही रहे।

भगवान् आदिनाथ ने द्विज शिशु पर अनुग्रह किया, जिससे कोई कष्ट न पाकर सुख से निकलकर भगवान के निकट आ विराजा और चरणों में प्रणाम किया। भगवान् महेश्वर पूछने लगे-हे वत्स!

महामत्स्य के उदर में तुम्हारा निवास किस असाधारण कारण हुआ, सत्य कहो। बालक बोला हे सर्वज्ञ! हे सर्वशक्तिमान्!! हे दयामय!!! आप स्वयं जानते हैं, मैं क्या कहूँ। इस प्रकार बालभाषित माधुर्य से अतिशय सन्तुष्ट हो एवं प्रसन्न होकर आदिशक्ति जगदम्बा से भगवान् मूलनाथ इस प्रकार बोले-हे शैलराज पुत्रि! यह बालक आपका पुत्र है, यह दिनमणि के सदृश संसार का प्रधान नेता होगा एवं सर्वदा प्रसन्नचित्त रहेगा, इसको पराजित करने वाला कोई नहीं होगा। भगवान् आदिनाथ द्विजपुत्र को आशीर्वाद देकर बोले-हे वत्स! तुम मत्स्यनाथ या मत्स्येन्द्रनाथ होगा, क्योंकि तुम मत्स्यावतार मत्स्यों के इन्द्र हो। अब जाओ, समस्त लोकों में भ्रमण करो। योगविद्या का विस्तार करो, यही हम दोनों का आदेश है।

मत्स्येन्द्रनाथ बोले हे नटराज! करुणामय!! यह सर्व आपका ही अनुपमानुग्रह है, मैं कृतकृत्य हूँ। महाप्रकाश मत्स्येन्द्रनाथ ने भगवान् एवं भगवती से आदेश प्राप्त कर योगविद्या वृद्धि के लिये वहां से प्रण या प्रयास किया, योग प्रचार की इच्छा से प्रथम अखिल भुवनों का भ्रमण किया। कुछ काल तक योग विद्या के प्रचार करने के अनन्तर लोकनाथ महाप्रकाश सिद्धनाथ जी के मन में भगवान् आदिनाथ की तपश्चर्या करने का विचार प्रकट हुआ, भगवान् के सात्विक ध्यान में स्थित हो गए एवं मनोरूपी कुसुमों से आदिनाथ परमेश्वर की आराधना करने लगे। लोकनाथ मत्स्येन्द्रनाथ जी के चिरकाल पवित्र तप से भगवान् अत्यन्त प्रसन्न हो गए एवं प्रकट होकर बोले हे नित्यनाथ! मैं तुम्हारे तप से अतिशय प्रसन्न हूँ।

स्वेच्छानुकूल वर देना चाहते हैं, तो मैं इसी को उत्तम समझता हूँ और याचना करता हूँ कि आप मेरे सहायक होकर अवतार धारण करें। मैं स्वयं आकर तुम्हारी सहायता करूँगा, तब तक योग विद्या विकास करो। ऐसा कहकर श्री महादेव कैलाश आद्रि को चले गये, करुणामय उस समय आर्य्यावली कितेश्वर महाप्रकाश सिद्धनाथ के योग प्रचार से यह योगविद्या, राजयोग, लययोग, हटयोग, मन्त्रयोग, ध्यान योग, विज्ञानयोग, प्रभृति विभिन्न नामों से प्रसिद्ध हुई। कुछ समय के चले जाने पर अमिताभ करुणामय के वर का स्मरण भगवान् मूलनाथ ने किया, उसी समय भगवान् ने श्री महादेवी के पूर्ववत् से प्रेरित होकर हृदय को उसी दशा में परिणत किया। उमा का अन्तस्थल अहङ्कार सागर में बीची लेने लगा, अभिमान की मात्रा से आच्छादित अचिन्त्य

शक्ति के आवेश में आकर श्री पार्वती भगवान् महेश्वर से बोली-हे आदिदेव आदिनाथ! जहाँ जहाँ आप हैं वहाँ वहाँ मैं आपसे पृथक् नहीं, मेरे बिना आपकी कोई सत्ता नहीं, मद्विशिष्ट ही आप हैं। हे महादेव आदिनाथ आप विष्णु हैं तो मैं लक्ष्मी हूँ, आप महेश्वर हैं तो मैं महेश्वरी हूँ, आप शिव हैं तो मैं शक्ति हूँ, आप ब्रह्मा हैं तो मैं सावित्री, आप इन्द्र हैं तो मैं इन्द्राणी, आप वरुण हैं तो मैं वरुणानी, आप पुरुष हैं तो मैं प्रकृति, आप ब्रह्म हैं तो मैं माया, मेरे से पृथक् आप नहीं हैं। जगदम्बा के वचनों का स्मरण कर मूलनाथ बोले-हे महेश्वरी! जहाँ जहाँ मैं हूँ वहाँ वहाँ आप विराजमान हैं, यह कथन सत्य नहीं, क्योंकि जहाँ जहाँ घट है, वहाँ वहाँ मृत्तिका अवश्य है, किन्तु जहाँ जहाँ मृतिका है वहाँ वहाँ

घट नहीं। आकाश सर्व पदार्थों में व्यापक है, सर्व पदार्थ आकाश में व्यापक नहीं। महादेव जी ने वर प्रदान इन दोनों का पालन समयापेक्षी अवश्य है, बस क्या था? भगवान् आदिनाथ मूलनाथ ने अपने आत्मबल समुदाय को दो भागों में विभाजित किया। एक समुदाय से स्वयं पूर्वरूप में ही अवस्थित रहे दूसरे समुदाय को गोरक्षनाथ रूप में परिणत किया। वे गोरक्षनाथ एकान्त निर्जन किसी विशेष पर्वत मध्य शुद्ध स्थान में विराजमान होकर समाधिस्थ हो गये। महेश्वरानन्द भगवान् गोरक्षनाथ के प्रबल तपोबल प्रताप से वह पर्वतराज अनुपम रूप से सुशोभित हुआ। कुछ ही समय के पश्चात् योग सम्प्रदाय प्रर्वत्तक श्री गोरक्षनाथ जिस पर्वत पर ज्ञानमय तप में विराजमान

थे, वहाँ जगदम्बा को साथ लेकर भगवान् आदिनाथ शिव ने गमन किया। मार्ग में ही कुछ विश्राम कर भगवान् श्री भवानी से बोले, हे गौरी! जो यह पर्वत समक्ष दीखता है, इसमें एक महान् परमपुरुष योगीराज चिरकाल से समाधिस्थ हैं। आप जाकर उनके दर्शन करें। आदिनाथ भगवान् मूलनाथ की आज्ञा को पाकर उनको प्रणाम कर महादेवी ने वहाँ से प्रस्थान किया। भगवान् गोरक्षनाथ को समाधि में बैठे ऐसे देखा मानो बहुत से सूर्य मिलकर ही प्रकाश कर रहे हैं। श्री शिव का रूप पूज्य जानकर हाथ में पुष्प लेकर श्री देवी ने गोरक्षनाथ को हृदय से आदेश किया। महादेवी ने विभिन्न विचारों के पश्चात् श्री महादेव जी के कथन का स्मरण किया, ऐसा न हो मेरे ही कथन का उत्तर देने के लिये यह कोई अचिन्त्य सामग्री रचाई गई हो? योगी

की परीक्षा का यही समय है। सत्यासत्य का निश्चय परीक्षा के बिना नहीं होता, माया के कार्यों को ही जीतना कठिन है, माया तो दूर रही उसे कैसे जीता जा सकता है। मेरा नाम माया है मैं सबसे बड़ी शक्ति हूँ, मैंने ब्रह्मा विष्णु आदि को भी बिना वश किये नहीं छोड़ा। उमा देवी महेश्वरानन्द गोरक्षनाथ भगवान् की परीक्षा लेने को तत्पर हो गई, चतुर्धा अपनी योगमाया से उत्तम जगन्मात्र के पदार्थों को रचकर प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित कर दिखाया और कोई पदार्थ शेष नहीं रहा, अवस्थित भगवान् गोरक्षनाथ के समक्ष महामाया के सहस्त्रों प्रयत्न इस प्रकार अस्त हो गये, जैसे मध्यान्हकालिक मार्त्तण्ड के समक्ष तारागण विलीन हो जाते हैं। भगवती ने महादेव के वचनों को सत्य समझा, यह मेरे लिए ही अद्भुत चमत्कार का आकार खड़ा किया है।

ऐसे विचार करती हुई पार्वती देवी को गोरक्षनाथ बोले-हे देवी! जाओ भगवान् आदिनाथ आपका स्मरण करते हैं योगाचार्य के अनुपम उपदेशामृत को पीकर वहाँ से भवानी ने भगवान् के पास प्रस्थान किया, पहुँचकर मूलनाथ आदिनाथ भगवान् को आदेश किया और कहा-हे ईश्वर! आपका कथित संकल्प यथार्थ ही है। मेरे बिना भी आप विद्यमान हैं अतः आपकी सत्ता ही प्रधान है। यह मैंने अनुभव किया, शक्ति का लय शक्तिमान् के ही अभ्यन्तर होता है। हे ईश्वर! ऐसा यह कौन अवस्थित योगीश्वर है, जिसने मेरी शक्ति को कुछ नहीं समझा। वह अपनी समाधि में ही अचल रहा। महादेव बोले-हे महेश्वरी! जिस योगी का तुमने दर्शन किया है उस योगीश्वर का नाम गोरक्षनाथ है। सर्व देव मनुष्यों का इष्ट देव है, माया से परे एवं काल का भी

काल है, समयापेक्षित अनेक रूपों से प्रकृति चक्र का संचालक है। हे महादेवी! मैं ही गोरक्षनाथ हूँ मेरा स्वरूप ही गोरक्षनाथ है। हम दोनों में किंचित् भी अन्तर नहीं, प्रकाश से भिन्न प्रकाश नहीं रहता। हे महादेवी! संसार का कल्याण ही वेद गौ पृथ्वी आदि की रक्षा हो इस हेतु से मैंने गोरक्ष स्वरूप को धारण किया है। जब जब योग मार्ग की रक्षा में अवस्थित होता हूँ यह गोरक्षनाथ नाम मेरे नामों में उत्कृष्ट है। भगवान् मूलनाथ बोले-हे महेश्वरी! जो पुरुष योग विद्या को सेवन करता है वही मृत्यु को जीतता है, और उपायों से मृत्यु नहीं जीती जाती। अन्य उपायों से थोड़ी बहुत आयु बढ़ सकती है। योगबल महाबली है चाहे एक रहे अनेक होकर विचरे चाहे भूमि में रहे, आकाश में भ्रमण करे,

चाहे सौ युग तक रहे सदा अमर रहे, स्थूल शरीर से रहे, चाहे सूक्ष्म शरीर से चाहे श्रोत्र से सुने चाहे बिना श्रोत्र से चाहे राजिका होकर रहे, चाहे पर्वत होकर, वह योगी ब्रह्मा विष्णु के कार्यों को भी करने में समर्थ हैं। भवानी बोली-हे प्रभो। आपको कोटिश: नमस्कार आपकी माया अनन्त है, जगत् आपका उद्यान है आप उसके माली हैं। इस प्रकार श्री महादेवी पार्वती से पूज्यमान महादेव जी कैलाश को पधारे। इधर कमलासन पर विराजमान श्री ब्रह्मा जी को योगी नारद बोले-हे प्रभो! पहले मैंने आपसे यह कथा सुनी है, महादेव जी ने सिद्धनाथ मत्स्येन्द्रनाथ जी को वर दिया था कि आप नाथवंश के तथा योग मार्ग के प्रवर्त्तक होवेंगे तो फिर संसार में उन्होंने किस प्रकार

योग का प्रचार किया और फिर मत्स्येन्द्रनाथ जी ने किस महामहिमशाली शिष्य को इस योग का उपदेश किया, नाथ नाम पूर्वक योगियों का सम्प्रदाय कैसे प्रबृद्ध हुआ। ब्रह्मा जी बोले-हे नारद! उसके पश्चात महेश्वर मूलनाथावतार भगवान् गोरक्षनाथ जहाँ महाप्रकाश मत्स्येन्द्रनाथ जी समुद्र तट पर तप कर रहे थे वहाँ को पधारे। वहाँ गोरक्षनाथ जी ने जाकर लोकनाथ मत्स्येन्द्रनाथ जी को समाधि द्वारा मनोयोग को प्रबोधित कर योगपद्धति को पूछा और विनीत भाव से स्तुति की।नाथपदयोग वंश प्रवर्त्तकता को प्राप्त किया। इसी भगवान् आदिनाथ मत्स्येन्द्रनाथ परम्परागत योग की शक्तिपात, करुणावलोकन, औपदेशिक इन तीन शिक्षाओं के द्वारा

अनेक राजा महाराजा ऋषि-मुनियों को कृतार्थ किया और उनको दिव्य ज्ञान देकर अमर पद का भागी बनाया।

इति श्री स्कन्दपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे भगवद्गोरक्ष-
नाथावतार कक्षा वर्णनविषयविशिष्ठ
एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः सम्पूर्णः।

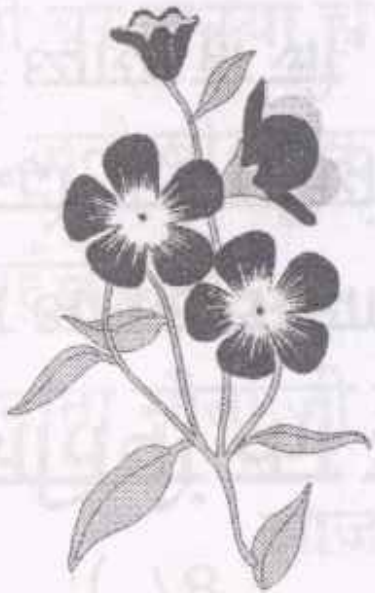

छः जतियों का शब्द

ॐ गुरुजी आज हमारे घर आनन्द वरत्या हो जी,

सिद्धो जती सतियों का दर्शन पाया हो जी

दर्शन पाया अलष ध्यानीं ध्याया हो जी,

दर्शन पाया अमर हो गई काया हो जी।।टेक।।

पहिला जती शिव शङ्कर घर जन्म्या हो जी,

जती स्वामी कार्तिक नाम धराया हो जी।

दूध उगल माता गौरां आगे धरिया।

माता गौरां का भरम मिटाया हो जी।

आज हमारे० (पूर्ववत)।।1।।

दूसरा जती राजा दशरथ घर जन्म्या हो जी,

जती लक्ष्मण नाम धराया हो जी।

बारह वर्ष वनखण्ड तप कीना हो जी।

राजा रामचन्द्र पार न पाया हो जी।

आज हमार० (पूर्ववत) ।।2।।

तीसरा जती माता अञ्जनी घर जन्म्या हो जी,

जती बीर बंकनाथ नाम धराया हो जी।

लंकनी मार लंका जाय पहुँचे हो जी,

माता सीता जी की खबर ल्याया हो जी।

आज हमारे० (पूर्ववत) ।।3।।

चौथा जती वेद व्यास घर जन्म्या हो जी,

जती शुकदेव नाम धराया हो जी।

बारह वर्ष गर्भ योनि में तप कीना हो जी,

शिव के वचनां से बाहिर आया हो जी।

आज हमारे० (पूर्ववत) ।।4।।

पांचवां जती पारस घर जन्म्या हो जी,

जती गरुड़ नाम धराया हो जी।

अष्ट कुली नाग भस्म जो कीना,

इक कुली नाग बचाया हो जी।

आज हमारे० (पूर्ववत) ।।5।।

छटवां जती गुरु गोरक्षनाथ कहिये हो जी,

जिन्हा साढ़े बारह पंथ चलाया हो जी।

यह तो गर्भ योनि नहीं आया हो जी,

निनानवें करोड़ राजा योगी जो कीना हो जी।

इनकी प्रजा का अन्त न पाया हो जी।

आज हमारे० (पूर्ववत) ।।6।।

सातवां जती नर नारायण कहिये हो जी,

जिसने मठ मूलथान थपाया हो जी।

रघुपति युगपति जुमला जगाया हो जी।

सिद्ध मेहरनाथ यश गाया हो जी।

आज हमारे० (पूर्ववत)।।7।।

।। भजन ।।

हमारे गुरु गोरक्षनाथ महान्। टेक।

नौ नाथों में नाथ कहावें, अलख पुरुष निर्वान।
भक्तों को वो तारें पलक में, देके योग का ज्ञान।।1।।
ऋद्धि सिद्धि वो देते सबको, करते आप समान।
विद्याओं के दाता जग में, दीनों का सुख दान।।2।।
हरिश्चन्द्र गोपीचन्द्र भर्तृहरि, पृथ्वी नारायण जान।
पूर्णमल ज्ञानेश्वर गहनी, कर दीने सरनाम।।3।।
सतयुग त्रेता आदि युगों में, धरते रूप प्रधान।
अनेक रूपों में वे विचरे हैं, जानत कोई सुजान।।4।।

वन पर्वत सागर जल थल में, सत्यलोक परिणाम।
महादेव वे देव सभी में, व्यापक एक समान।।5।।
सर्वशक्ति सर्वज्ञ ज्ञाननिधि, भक्ति मुक्ति की खान।
अलख पुरुष परिणाम शून्य वे, मानों के भी मान।।6।।

हमारे गुरु गोरक्षनाथ महान्।

।।ॐ शिव गोरक्ष योगी।।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ

योगी महासभा

—: पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड)

फोन : 01334-226583

Website : http://.yogigorakshnath.org, E-mail : yogivilasnath12@gmail.com

———— * ————

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह॰ जिला–रोहतक (हरियाणा) फोन : 01262–215718

——नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन ——

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
2. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
3. श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	400/-
4. श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	65/-
5. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
6. श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	125/-
7. श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	35/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
8. श्रीनाथ सम्प्रदाय के तीर्थ स्थल (प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
9. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	10/-
10. श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
11. श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
12. श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
13. ॐ शिवगोरक्ष व्रत कथा	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	15/-
14. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु महन्त डॉ. योगी विलासनाथ)	160/-
15. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	40/-
16. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	20/-
17. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
18. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	50/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	60/-
20. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	140/-
21. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	100/-
22. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	70/-
24. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
25. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
26. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
27. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
28. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
29. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य

उप कार्यालय-गोरक्षनाथ मन्दिर, गोरखपुर
फोन : 0551-2255453, 2255454, 2255455

30. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
31. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
32. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
33 गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-
34. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
35. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-
36. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
37. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
38. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
39.गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-
40. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
41. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
42. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
43. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
44. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
45. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
46. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
47. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
48. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
49. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
50. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
51. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
52. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
53. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
54. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
55. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
56. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
57. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
60. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
61. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
62. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD-VCD
अमृतांजलि (भाग-1+2) (गोरक्ष चालीसा, चौरासी सिद्ध, चालीसा, ज्ञान गुदडी, भजन इत्यादि)	गायक-सोमनाथ शर्मा भजन रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	40/-	50/-

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5" X 3.5"	3/-	-

यन्त्र (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/., 20/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	10/-, 15/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	10/-, 20/-, 25/-, 40/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-, 1800/-
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ

नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9"	2 Kg	1100/-	800/-
2. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6"	1 Kg.	800/-	700/-
3 आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10"	1.300gm.	1100/-	800/-
4. आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6"	600gm.	800/-	
5. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9"	2 Kg.	1100/-	800/-
6. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6"	1 Kg.	800/-	700/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3 X 3 इंच	50/-	60/-
5 X 5 इंच	70/-	80/-
7 X 7 इंच	90/-	110/-
9 X 9 इंच	300/-	325/-
12 X 12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ,भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रानुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB/C=10"X5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B / C = 10 " X 8 "	35/-	-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम **D. D.** भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा **V.P. L., V.P.P.** से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - महन्त डॉ. योगी विलासनाथ-मो.: 09412072703

पश्चिम

दक्षिण

उत्तर

पूर्व

Website : www.yogigorakshnaht.org E-mail : media@yogigorakshnath.org

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

Website : www.yogigorakshnaht.org E-mail : media@yogigorakshnath.org

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, पालीवाल धर्मशाला, अपर रोड, हरिद्वार। फोन : 228796